**डॉ० शैलेन्द्र मोहन मिश्र**

**स० प्रा० , मैथिली विभाग**

**सी० एम० जे० कॉलेज**

**दोनवारी हाट , खुटौना**

**मो० न० 9546743796**

**Email –** [**mishrasm966@gmail.com**](mailto:mishrasm966@gmail.com)

**B. A. III**

**काव्यक प्रयोजन**

**वामनक अनुसार काव्यक दुइये गोट प्रयोजन अछि – प्रीति आ कीर्ति | ई दुनू प्रयोजन जीवनकाल आ ओकर बाद मे सेहो रहैत अछि | वामन आनंदानुभूति कें काव्यक दृष्टि प्रयोजन तथा कीर्ति कें अदृष्ट प्रयोजन कहलनि अछि :-**

**“ काव्य सतदृष्टादृश्यर्थप्रीति – कीर्ति – हेतुत्वात | “**

**वामन ई काव्य प्रयोजन सहृदय लोकनिक आधार पर देलनि अछि |**

**रुद्रट काव्य – प्रयोजन पर विस्तार सँ विचार कएलनि अछि | ओ काव्यक अनेक प्रयोजन कहलनि अछि | हुनक कथन छनि –**

**“ ज्वलदुज्ज्वलवाक्प्रसर: सरसं कुर्वन्महाकवि: काव्यम**

**स्फुटयाकल्यां प्रतनीति यश: परस्यापि ||**

**अर्थात अलंकार सभक कारण देदीप्यमान आधर्म दोष सभ कें नहि होएबाक कारण निर्मल रचनाक निर्माता महाकवि सरस काव्यक रचना करैत अपन तथा नायकक प्रत्यक्ष , युग – युगांतर धरि रहए वला यशक विस्तार करैत अछि | रसिकजन नीरस शास्त्र सभ सँ भय खाइत छथि | अतएव सहज आ शीघ्र उपाय सँ चतुर्वर्गक प्राप्ति कराएब काव्यक प्रयोजन अछि |**

**एहिसँ ज्ञात होइत अछि जे रुद्रटक समय मे काव्य – साधना कोनो नायकक चरित्र पर आधृत होइत**

**छल | एहि हेतु ओ कवि तथा वर्ण्य नायकक यश कें काव्यक प्रयोजन मानैत छथि |**

**वक्रोक्तिजीवितकार आचार्य कुंतक काव्यक प्रयोजन पर गंभीरता सँ विचार कएलनि अछि | हुनका अनुसारें काव्य – धर्म , अर्थ , काम , मोक्ष पुरुषार्थ चतुष्टयक साधक होइत अछि , सहृदय कें आह्लाद देमएवाला**

**होइत अछि | व्यवहारक साधक तथा अलौकिकानंदक जनक होइत अछि |**

**अभिनवगुप्त प्रीति कें काव्यक मुख्य प्रयोजन मानैत छथि , मुदा ओकरा रसानुभुतिक अर्थ मे ग्रहण कएल गेल अछि |**

**हेमचंद्र काव्यक प्रयोजन आनंद , यश एवं कान्तासम्मित उपदेश कें मानैत छथि | एहि क्रममे ओ आनन्द कें सर्वश्रेष्ठ प्रयोजन सिद्ध कएने छथि | एकर कारण देत ओ कहैत छथि जे आनंद एकटा एहन तत्व अछि जे कवि एवं सहृदय दुनू मे वर्तमान रहैत अछि –**

**“ काव्यमानन्दाय यशसे कान्तातुल्यतयोपदेशाय च | “**

**आचार्य भोजराज कीर्ति आ प्रीति कें काव्यक प्रयोजन मानैत छथि – “ कवि कीर्ति – प्रीति च विन्दति | “**

**आचार्य मम्मट पूर्ववर्ती आचार्यक काव्य प्रयोजन सभक समाहार करैत छ: गोट प्रयोजन मानित छथि –**

**यशक प्राप्ति , धनक प्राप्ति , व्यवहारिक ज्ञानक उपलब्धि , अशिवक क्षति , अलौकिक अंडक प्राप्ति आ पत्नीक समान उपदेश : -**

**“ काव्यं यशसेअर्थकृते व्यवहार विदे शिवेतरक्षतये |**

**सद्यः परनिर्वृतते कान्ता सममित तयोपदेशयुजे ||**

**मम्मटक अनुसार यश , अर्थ आ अनिष्ट निवारण ई तीन कविनिष्ट प्रयोजन तथा शेष तीन व्यवहारिक ज्ञानक उपलब्धि , अलौकिक आनंद आ कान्ता सम्मित उपदेश पाठ कनिष्ठ प्रयोजन अछि | एतावता ज्ञात होइत अछि जे संग्रहक दृष्टि सँ मम्मटक मत अन्यतम अछि | एतवय नहि इहो देखल गेल अछि जे परवर्ती काव्य शास्त्री लोकनि मम्मटहिक मत सँ प्रेरणा लेलनि अछि | एहि क्रममे देखल गेल अछि जे हेमचन्द्र मात्र शब्द भेद सँ हिनकहि मत कें उपस्थापित कए देलनि अछि :-**

**“ काव्यमनोदय यशसे कान्तातुल्यतयोपदेशाय च | “**

**आचार्य विश्वनाथ भामहक सदृश पुरुषार्थ – चतुष्टय कें काव्यक प्रयोजन मानलनिअछि | हुनक कथन छनि जे अल्पबुद्धिवला सभ कें सेहो सुख सँ बिना कोनो परिश्रम कें चतुर्वर्ग अर्थात धर्म , अर्थ , काम , मोक्ष रूप फलक प्राप्ति काव्यक द्वारा भए सकैत अछि :-**

**चतुर्वर्ग फल प्राप्ति: सुख्द्ल्पधियामपि |**

**काव्यदेव यतस्तेन तत्स्वरूपं निरूप्यते ||**

**केशव मिश्र सेहो एहि रूप सं काव्यक प्रयोजन कें प्रतिपादित कएलनि अछि |**

**“ लाभ: पूजा रत्यातिधर्म: कामश्च मोक्षश्च |**

**इष्टानिष्ट प्राप्ति त्यागौ ज्ञानं फलानि काव्यस्य ||**

**पंडितराज जगन्नाथ यश , लोकोत्तर आनन्द , गुरु , राजा आ देवता सभक प्रसन्नता कें काव्यक प्रयोजन मानैत छथि ! “ तत्र कीर्ति परमाल्हाद गुरुराज देवता प्रसादाद्यनेक प्रयोजनस्य काव्यस्य | “**

**एतावता ज्ञात होइत अछि जे काव्यशास्त्रक इतिहास मे काव्य – प्रकाशकार मम्मट द्वारा प्रतिपादित काव्य – प्रयोजन सर्वाधिक मान्य एवं चर्चाक विषय रहल अछि | मम्मटक अनुसार काव्यक विशिष्ट प्रयोजन आनंद अछि | ई सभ प्रयोजन मे मुख्य अछि जे पढैत देरी अपूर्व आनंदक सृष्टि होइत अछि – “ सकल प्रयोजन – मौलिभूतं समनतरनेन रसास्वाद्त – समुद्भूत्तं विगलति विद्यांतर मानन्द्म “ ई प्रयोजन कवि आ सहृदय संवेद्य अछि | ( क्रमशः )**